सागौन के साथ सफेद मूसली की खेती

प्राकृतिक स्थान :

सफेद मूसली (Chlorophytum borivilianum) एक महत्वपूर्ण औषधीय पौधा है जो कि उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में पाया जाता है। भारत में यह पौधा मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश के साल तथा सागौन के जंगलों में प्राकृतिक रूप से पाया जाता है। सागौन के उच्च तकनीकी के वृक्षारोपण आजकल बहुतायत में किये जा रहे हैं। इन वृक्षारोपण के बीच की खाली जगह में सफेद मूसली की खेती कर प्रतिवर्ष अतिरिक्त आय प्राप्त की जा सकती है।

औषधीय उपयोग :

सफेद मूसली के जड़ या कंद का उपयोग आयुर्वेदिक औषधियां बनाने में होता है। यह मुख्य रूप से शक्तिवर्धक के रूप में प्रयोग किया जाता है। साथ ही इसका उपयोग गठिया रोग, शेरा / नाड़ी संबंधी रोग, मधुमेह आदि में भी किया जाता है।

खेती की पद्धति :

(1) मृदा और जलवायु :

सफेद मुसली का पौधा एक कंद वाला पौधा है जिसकी खेती के लिये हल्की रेतीली जमीन जिसमें पानी का निकास अच्छा हो, उत्तम होती है। इस पौधे की खेती हेतु काली / चिकनी मिट्टी उपयुक्त नहीं है।

(2) भूमि की पूर्व तैयारी :

सफेद मूसली की खेती हेतु जमीन को 2-3 बार 30-40 से.मी. गहरा जोतना चाहिए जिससे कि भूमि नरम हो जाये और जड़ भूमि के अंदर अच्छी तरह से बढ़ सके। जुताई उपरान्त गोबर की खाद 8-10 टन प्रति हेक्टेयर के हिसाब से खेत में फैलाकर जुताई कर मिट्टी में अच्छी तरह से मिला देना चाहिए। खेत को समतल करके यह निश्चित कर लेना चाहिए कि खेत में कहीं पानी का जमाव न हो। यदि खेत में पानी रूकता है तो फसल के उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

(3) **सफेद मूसली की पौध तैयार करना :**

सफेद मूसली की खेती बीज तथा कंद दोनों से की जा सकती है। बीज द्वारा खेती के लिये प्रति हेक्टेयर 18-20 कि. ग्रा. बीज की आवश्यकता होती है। बीज में अंकुरण कम (14-16 प्रतिशत) होता है, अतः गांठ या प्रोपग्यूल्स के द्वारा खेती करना ज्यादा उपयुक्त होता है। कंद से पौध तैयार करने के लिये स्वस्थ गांठ या प्रोपग्यूल्स जिसमें पौधे का डिस्क या रूट क्राऊन का कुछ हिस्सा साथ में लगा रहे तथा गांठ का छिलका भी क्षतिग्रस्त नहीं हो, का प्रयोग करना चाहिए। प्रति एकड़ लगभग 5 से 5.5 क्विंटल गांठ या प्रोपग्यूल्स की आवश्यकता होती है। इन गांठ या प्रोपग्यूल्स को नर्सरी में लगाकर पौध तैयार कर लेते हैं।

(4) **सफेद मूसली का रोपण :**

सफेद मूसली के रोपण हेतू जून का प्रथम सप्ताह या हल्की वर्षा उपरान्त का समय उपयुक्त होता है। नर्सरी में तैयार किये गये स्वस्थ पौधों को सागौन के पौधों के बीच में कतार से 10 इंच की दूरी पर लगाया जाता है। कतार से कतार की दूरी भी 10 इंच ही रखी जाती है। पौधों को लगाते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि यह जमीन से 1 इंच से अधिक गहराई पर न लगें।

(5) **सागौन की छंटाई :**

सफेद मूसली को सूरज की रोशनी की आवश्यकता होती है इसलिए समय - समय पर सागौन के पौधों के पत्तों की छटाई करते रहना आवश्यक है। सागौन के पत्तों की लगभग 50 प्रतिशत छटाई करते रहने से मूसली का अधिकतम उत्पादन प्राप्त होता है।

(6) **सिंचाई एवं निदाई :**

सफेद मूसली के पौधे को सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। खेत में पौधा रोपण के समय यदि आवश्यक हो तो एक सिंचाई करना उपयुक्त रहता है। यदि लम्बे समय तक वर्षा न हो तो 15 दिन के अन्तराल से सिंचाई करना चाहिए।

अगस्त व अक्टूबर के माह में गुड़ाई करने से सफेद मूसली की अच्छी फसल प्राप्त की जा सकती है।

(7) **खुदाई :**

नवम्बर माह में सफेद मूसली के पत्ते सूखकर झड़ने लगते हैं जिससे पता लगता है कि फसल तैयार हो रही है। प्रत्येक पौधे से लगभग 10-12 कंद या फिंगर प्राप्त होते हैं। इन्हें जमीन में ही 1-2 माह तक रहने दिया जाता है। हल्की सिंचाई करके भूमि को नम रखना चाहिए जिससे अच्छा उत्पादन हो सके। तत्पश्चात् कंद या गांठ को खेत से निकालकर पानी से धोकर तथा छीलकर अच्छी तरह सुखाकर बाजार में बेचा जाता है। तैयार माल को नमी से बचाने के लिये पॉलीथीन की थैलियों में बंद किया जा सकता है।

उपज एवं आय :

प्रति एकड़ सूखे कंद की उपज 3 से 3.5 क्विंटल तक प्राप्त होती है तथा बाजार में यह गुणवत्ता के अनुसार रू. 600/- से 1500/- प्रति किलो की दर से बिकती है।

इस प्रकार सागौन के साथ सफेद मूसली की खेती से प्रतिवर्ष औसतन दो से ढाई लाख रूपये की अतिरिक्त आय प्रति हेक्टेयर प्राप्त की जा सकती है।

सम्पर्क सूत्र - अन्य तकनीकी जानकारी के लिए उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधन संस्थान, डाकघर- आर.एफ. आर.सी. मण्डला रोड, जबलपुर के कृषि वानिकी प्रभाग अथवा विस्तार प्रभाग से सम्पर्क कर सकते हैं। दूरभाष क्र. 544002, 544004, 544007.

Printed at : Amrit Offset, Jabalpur # 317943